टप्पा शैली का सितार वादन पर प्रभाव

डॉ. अंकित भट्ट
असिस्टेंट प्रोफेसर,
वनस्थली विद्यापीठ
(राज.)

टप्पा मूलतः प्राचीन पंजाब (वर्तमान पाकिस्तान) के झंग सियाल प्रांत के लोकगीत से प्रभावित विधा है। वहां के लोकगीतों और टप्पा गायन की हरकतों में बहुत समानता है। इसका एक अच्छा उदाहरण इस गांव में प्रचलित लोक गाथा हीर का गायन है। हीर में जो हरकतें ली जाती हैं उसी तरह की हरकतों का प्रयोग टप्पा गायन शैली में भी होता है। टप्पा शैली को लखनऊ के नवाब आसुफद्दौला के समकालीन प्रचलित संगीतज्ञ गुलाम रसूल के पुत्र गुलाम नबी शौरी ने शास्त्रीय संगीत में प्रतिष्ठित किया।

शब्द कोष में, टप्पे के बहुत से अर्थ हैं जैसे – उछाल, कूद, फलांग, अंतर, फर्क, एक प्रकार का चलता गाना जो पंजाब में चलता था। इसका अंतिम अर्थ ही संगीत लिए उपयुक्त है।

टप्पे का गाना ख्याल तथा ध्रुपद की अपेक्षा अधिक संक्षिप्त है। टप्पे सब राग में नहीं होते। ख्याल की ही कतिपय तालों में बहुधा टप्पे गाए जाते हैं। टप्पों की रचना आधुनिक ही कही जाएगी। टप्पों की प्रकृति की ओर देखने से यही दिखाई देता है कि ये गति व हास्य, आनंद, प्रणय इत्यादि लघुभावोपयोगी अधिक होते हैं। Capt. Willard अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि टप्पे का गायन पंजाब में ऊँट हांकने वाले लोगों से सर्वप्रथम आरंभ हुआ। आगे चलकर शौरी, नामक प्रसिद्ध गायक ने उनका श्रृंगार करके उन्हें उच्च श्रेणी का बना दिया।

टप्पा गायन शैली में आलाप नहीं किया जाता। इस विधा में बंदिश के बोलों को आरंभ से ही छोटी–छोटी दानेदार तानों से अलंकृत किया जाता है। टप्पा गायकी में खटका, मुर्की, जमजमा, गिटकरी, अलंकारिक तान, लच्छेदार तान, सपाट तान, बोल तान, दानेदार तान, अवरोहात्मक तान आदि का विशेष प्रयोग अन्य विधाओं से भिन्न है। टप्पे का गायन मध्य लय में किया जाता है। इसमें अधिकतर अद्धा, पंजाबी, पश्तों, इकबई आदि तालों का प्रयोग किया जाता है।

टप्पा गाने का ढंग ख्याल से बिल्कुल निराला है। इसकी गति अत्यंत चपल होती है। इसकी तानें दानेदार व बहुत तैयार लय में गाई जाती हैं। टप्पे की तानें छोटे–छोटे टुकड़ों से बनी होती हैं। टप्पे में मुर्की, जमजमा, आंस आदि का भी प्रयोग होता है।

सेनिया घराने के बहादुर खाँ के शिष्य वंशजों में अयोध्या निवासी गुलामनबी ने टप्पा की उन्नति के लिए बड़ा प्रयास किया और वे उसमें अनेक प्रकार के अलंकारों का संयोजन कर उसे शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत ले आये। ऐसा कहा जाता है कि इनकी आवाज बहुत पतली थी इसलिए इन्हें ख्याल की तानबाजी से संतोष ना हो सका। अतः अपनी आवाज के अनुरूप ही गायन शैली ढूंढ निकालने का प्रयत्न करने लगे। इन्होंने पंजाबी भाषा सीखने के बाद, उसी भाषा में कुछ गीत रचे और उन्हें अपनी गायकी की विशेष बंदिश में ढालकर टप्पे का रूप दिया।

अनेक प्रख्यात सितार वादकों ने अपनी वादन शैली में टप्पा शैली के वादन को यथाविधि उतारा है। इन कलाकारों ने टप्पा शैली की सूक्ष्म तकनीकों को अपने सितार में स्पष्ट रूप से उतारा है। डॉ. कविता चक्रवर्ती के अनुसार श्री बुद्धादित्य मुखर्जी के सितार वादन में टप्पा शैली ही प्रमुख आकर्षण रहता है। उनका बजाया हुआ राग काफी में टप्पा सुनने पर उनके बाज की व टप्पा शैली की सूक्ष्म तकनीकों का आभास स्पष्ट होता है।

टप्पा शैली की विशेषताओं को सितार वादकों ने भी ग्रहण किया एवं टप्पा शैली पर आधारित अनेक गतों की रचना की। जिन्हें टप्पा अंग की गतें कहा जाता है। टप्पा अंग के खटके, मुर्की, ज़मज़मा, गिटकरी तथा विभिन्न तानों आदि का प्रयोग भी वादक अपनी वादन शैली में करते हैं। प्रख्यात सितार वादक सेनिया घराने के उस्ताद मुश्ताक अली खाँ साहब के सितार वादन में टप्पा शैली का विशेष महत्व था। इस संदर्भ में उनके शिष्य पद्मभूषण पं. देवव्रत चौधरी के अनुसार "It may be interesting to note that Khan Sahib played 'Kirtan and Tappa' style in sitar in thirties when many of our present masters

were not born." टप्पा अंग की गतों, हरकतों या इसके अवयवों का प्रयोग तो प्रायः सितार वादक अपनी वादन शैली में कर लेते हैं परंतु वाद्यों पर पूर्ण टप्पा वादन एक कठिन काम है। उदाहरणस्वरूप वर्तमानकालीन युवा सितार वादकों में बुद्धादित्य मुखर्जी ने राग काफी में पूर्ण टप्पा वादन करके एक अत्यंत कष्ट–साध्य काम किया है।

उदाहरण के लिए टप्पा अंग की गत –राग काफी – त्रिताल –

ग				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16

सारे सारेग गरेग सासा धनी

ग रे ग गग रे नीनी सा सम गरेग रे सा

अंतरा

प पध पधनीनी प ग नीनी सा सान गरेग रे सा

ग 2 0 3

राग खमाज [4]

सितार बुद्धादित्य मुखर्जी तबला [illegible] अहमद

त्रिताल मध्यलय (पंजाबी ठेका)

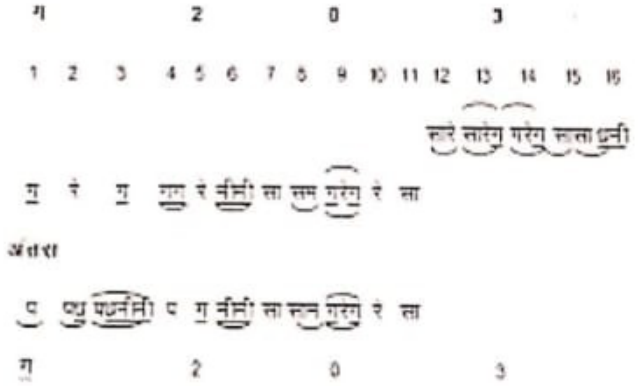

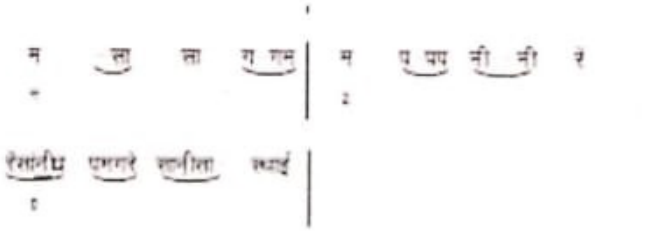

स्थाई

गमपध | सानीध मगरेग गम प

सां प प म | ग

गमपध | सानीध मगरेग गम प

धप धम ग | ग गरेग मप ग

ग गरे सा ग | मप सां नीसारे रेसांनी

ध धनीसा सानीध प | नीनीधप धनीसारे रेसांनीध पमगरे

गमपध नीधपम गरेसानी स्थाई |

अंतरा | ग मग धनी नि

नी नीसा सानीसा सांध | धनी धनी रे नीनीधप

म सा सा ग गम | म प पप नी नी रें

रेंसानीध पमगरे सानीसा स्थाई |

विश्लेषणात्मक विवेचना –

पूर्व में यह वर्णित किया जा चुका है कि बुद्धादित्य मुखर्जी उन गिने चुने सितार वादकों में से हैं जो सितार पर टप्पा बजाने के लिए प्रसिद्ध हैं। ऊपर जो टप्पे की बंदिश एवं आगे जो टप्पे की बंदिशें दी जा रही हैं उन्हें केवल स्थूल रूप से स्वरलिपिबद्ध किया गया है क्योंकि इन बंदिशों को हूबहू लिपिबद्ध करना संभव नहीं है।

मध्यलय त्रिताल या अद्धा की इस बंदिश का उठान पं. मुखर्जी 12 वीं मात्रा से रखते हैं। दमदार वादन एवं मिज़राब के स्पष्ट बोल इस टप्पे को जीवन सा प्रदान करते प्रतीत होते हैं। द्रुत गति के दिर–दिर बोल एवं गमक से इस टप्पे को गायन जैसा रूप प्रदान किया गया है।

पं. बुद्धादित्य मुखर्जी ने अपनी अद्भुत कल्पना शक्ति एवं गहन साधना का परिचय इस टप्पे में दिया है। कभी टप्पे का सम् सां पर रखा है तथा कभी पंचम के परदे से सां की मींड़ लेते हुए धप धम पर दर्शाया है। बंदिश में ही ठाह, दुगुन एवं तिगुन लयकारियों का भी समावेश है। प्रायः राग खमाज में धनीसा में शुद्ध निषाद का प्रयोग होता है परंतु इस टप्पे में अनेक बार धनीसां में कोमल निषाद का प्रयोग किया है जो बहुत मधुर लगता है।

राग काफी [5]

सितार – श्री बुद्धादित्य मुखर्जी, तबला – श्री [illegible]

ताल – अद्धा (या पंजाबी ठेका)

स्थाई

रेग | ग रेनी –नी स

ग –रे – रे–गग | सा – नीनीसम सासा

नीनीसम रे––– रेगमा | (स्थाई की पुनरावृत्ति)

मींड़

| – –नी धनीधप मपमग

सा प ग प | [illegible]

[illegible]

स्थाई

सानीसारे – रेग रेग | ग रेनी –नी स

स्थाई की पुनरावृत्ति –

अंतरा

| [illegible]

[illegible]

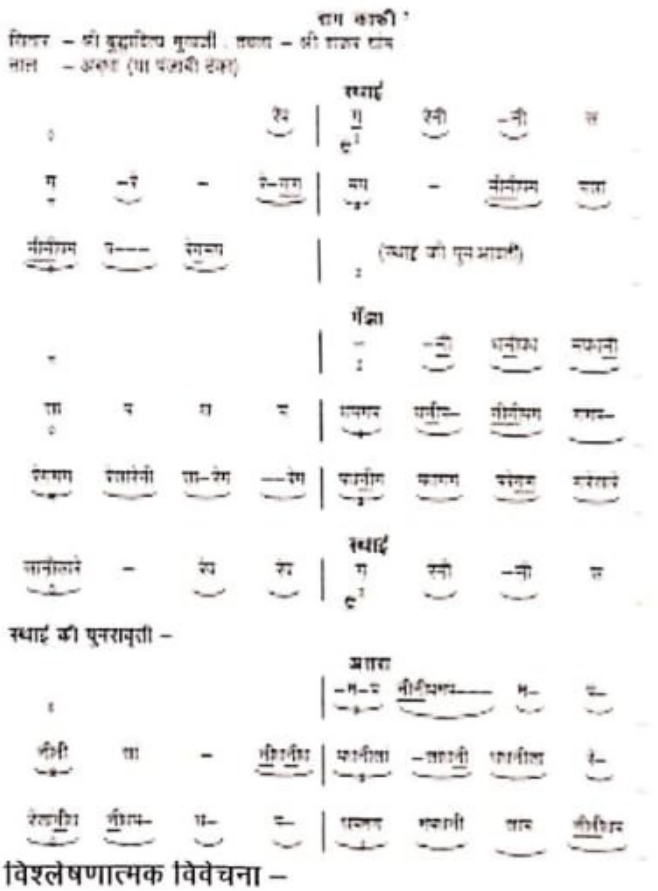

[illegible]

विश्लेषणात्मक विवेचना –
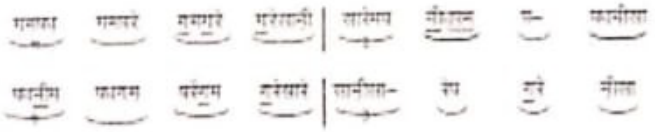
राग काफी के इस टप्पे का उठान 12वीं मात्रा से रखा है। परंतु पूरी टप्पे की बंदिश में श्री मुखर्जी ने इसे अनेक बार 13वीं एवं कई बार 14वीं मात्रा से भी उठाया है। इस टप्पे का चलन बहुत ही दुर्गम प्रतीत होता है एवं इस तथ्य से परिचय भी करवाता है कि क्यों अधिकांश सितार वादक टप्पे की बंदिश सितार पर नहीं बजाते।

स्वरों की जटिलता ही इस टप्पे की मुख्य विशेषता है। स्वरों का निश्चित क्रम नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि पंडित बुद्धादित्य मुखर्जी ने अपनी संपूर्ण कल्पना शक्ति, कौशल एवं साधना को इस टप्पे में उकेर दिया हो। द्रुत गति के स्वर एक के बाद एक गुथे हुए से प्रतीत होते हैं। कहीं कहीं पर विश्राम भी है परंतु सिर्फ एक या दो मात्रा का। उसके बाद अचानक द्रुत गति से स्वरों का समावेश इस टप्पे को वैचित्रय प्रदान करता है। राग काफी के इस टप्पे में श्रृंगार रस की प्रचुरता है।
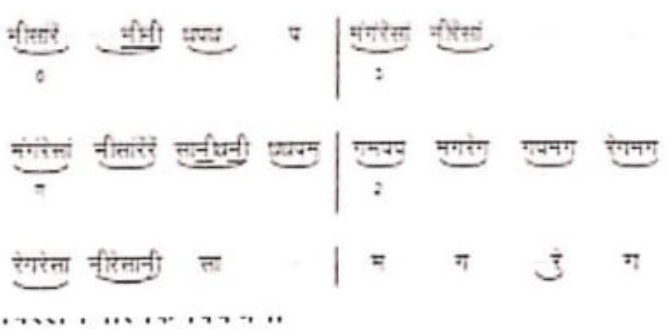
राग खमाज श्रृंगारिक एवं शांत प्रकृति का होता है। पंडित गिरिराज ने इस राग में बहुत जटिल एवं क्लिष्ट स्वर समुदायों का प्रयोग न करके स्वरों की चाल ठाह, दुगुन एवं चौगुन रखी है। स्थायी एवं अंतरे के अधिकांश स्वर चार–चार के स्वर समुदाय हैं।

द्रुत गति में स्वर होने के उपरांत भी इस टप्पे में चैनदारी और सुकून की अनुभूति होती है। बंदिश का उठान 13वीं मात्रा से रेंसानीध से किया गया है। यह स्वर पंचम के परदे से मींड़ एवं गमक द्वारा लिये गए हैं जो आनंद विभोर कर देते हैं।

निष्कर्षतः टप्पा गाने का ढ़ंग ख्याल से बिल्कुल निराला है। इसकी गति अत्यंत चपल होती है। इसकी तानें दानेदार व बहुत तैयार लय में गाई जाती हैं। टप्पे की तानें छोटे–छोटे टुकड़ों से बनी होती हैं। टप्पे में मुर्की, जमजमा, आंस आदि का भी प्रयोग होता है।

प्रख्यात सितार वादकों ने अपनी वादन शैली में टप्पा शैली के वादन को यथाविधि उतारा है। टप्पा शैली की विशेषताओं को सितार वादकों ने भी ग्रहण किया एवं टप्पा शैली पर आधारित अनेक गतों की रचना की। जिन्हें टप्पा अंग की गतें कहा जाता है। टप्पा अंग के खटके, मुर्की, जमजमा, गिटकरी तथा विभिन्न तानों आदि का प्रयोग भी वादक अपनी वादन शैली में करते हैं। प्रख्यात सितार वादक सेनिया घराने के उस्ताद मुश्ताक अली खां साहब के सितार वादन में टप्पा शैली का विशेष महत्व था। श्री बुद्धादित्य मुखर्जी के सितार वादन में टप्पा शैली ही प्रमुख आकर्षण रहता है। उनका बजाया हुआ राग काफी में टप्पा सुनने पर उनके बाज की व टप्पा शैली की सूक्ष्म तकनीकों का आभास होता है।

. रॉय ,डॉ. एस. सुदीप – जहाँ–ए–सितार, – पृष्ठ सं. 98
. भातखण्डे, पंडित विष्णु नारायण– भातखण्डे संगीत शास्त्र – पृष्ठ सं. 56
. रॉय, डॉ. वी .एस. सुदीप –जहाँ–ए–सितार – पृष्ठ सं. 98
. शर्मा ,सत्यवती – ख्याल गायन शैली–विकसित आयाम – पृष्ठ सं. 76
. जैन , डॉ वीणा–सेनिया घराने की शैली एवं परंपरा ; शोध प्रबंध– पृष्ठ सं. 327
. www.youutbe.com/khamajtappa/buddhadityamukherjee
. www.youtube.com/kafitappa/buddhadityamukherjee
. www.youtube.com/panditgiriraj/khamajtappa